P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन

रविबाला सोलंकी
प्राचार्य,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
तिलक शिक्षक प्रशिक्षण (महिला) महाविद्यालय,
त्रिवेणीनगर,जयपुर,
राजस्थान, भारत

भूवेन्द्र सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान,
भारत

सारांश

प्रत्येक विद्यार्थी की आकांक्षा भिन्न–भिन्न होती है। वे अपनी सामर्थ्यानुसार उसे पूर्ण करने का प्रयास करते हैं। विद्यार्थियों की आकांक्षा किसी एक ही क्षेत्र से सम्बन्धित न होकर, भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में उनकी रुचि के अनुसार होती है जैसे– कुछ सरकारी नौकरी करना पसन्द करते हैं, कुछ ज्यादा से ज्यादा धन कमाना चाहते हैं तो कुछ विद्यार्थियों का मन उच्च शिक्षा प्राप्त कर विदेश जाने को भी लालायित होता है। प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर उच्च स्तर का होता जा रहा है। इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रत्येक विद्यार्थी और अभिभावक शैक्षिक व व्यावसायिक क्षेत्र में सर्वोच्च सफलता की महत्वाकांक्षा रखते हैं।

मुख्य शब्द : उच्च माध्यमिक स्तर, विज्ञान संकाय, व्यावसायिक आकांक्षा।

प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है। पिछले कई दशकों में विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनों ने न केवल मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति की है, अपितु मानवीय आकांक्षाओं को भी एक नवीन दिशा प्रदान की है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि विज्ञान का महत्व उसकी सामाजिक उपादेयता के कारण बढ़ा है। विज्ञान पर दोषारोपण किया जाता है कि एक तरफ जहाँ विज्ञान ने मानवीय प्रगति को गति प्रदान की है, वही इसने कई समस्याओं को जन्म दिया है। लेकिन, ऐसा कहना न्याय संगत नहीं है। विज्ञान की प्रगति 'सत्य की खोज' पर आधारित है। इसी प्रेरक स्तम्भ के कारण ही विज्ञान अपनी ऊंचाईयों के शिखर पर है। आज जिस आधुनिक सम्यता में जीने का हम गर्व अनुभव करते है, आकाश को छूने एवं चॉद तारों पर पहुॅचने की सुखद अनुभूति करते हैं, परमाणु पर विजय की कल्पना से ही सिहर उठते हैं, इन सब उपलब्धियों का श्रेय विज्ञान को ही है। आज विज्ञान के क्षेत्र में उथल पुथल मची हुई है तथा आधुनिक विज्ञान का विकास अत्यन्त द्रुतगति से हो रहा है। विज्ञान ने अभियांत्रिकी के क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोडा है तथा इसी के सहयोग से अभियांत्रिकी के क्षेत्र में नवीन शाखाओं का उदय हो रहा है तथा विज्ञान की शिक्षा और अनुसंधानों को असाधारण महत्व दिया जा रहा है। विज्ञान ने हमारे जीवन में क्या भूमिका निभाई है, इसे देखने के लिए किसी आधुनिक कमरे में बैठकर उसका चारों और निरीक्षण करना ही पर्याप्त होगा। आपको कोई भी वस्तु ऐसी नहीं मिलेगी जिसमें विज्ञान परिलक्षित नहीं होता हो। बिजली का प्रकाश, एयर कण्डीशनर, आकर्षक दीवारे व फर्नीचर, खिडकी, दरवाजों पर लगे रेशमी भारी पर्दे, फर्श पर बिछा कालीन, रंगीन टी.वी., डी.वी.डी, फ्रिज, टेलीफोन, इन्टरकॉम, कम्प्यूटर आदि आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कमरा विज्ञान के चमत्कार का ही परिणाम है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आधुनिक संसार का निर्माण विज्ञान ने किया है और विज्ञान ही इसकी व्यवस्था कर रहा है। यहाँ तक कि हमारे अस्तित्व का श्रेय भी विज्ञान को ही है।

व्यावसायिक आकांक्षा की पूर्ति उपलब्धि द्वारा होती है। उपलब्धि एक प्रतिष्ठित समाज है जिसमें एक व्यक्ति को देखा जा सकता है कि उसने समाज में क्या–क्या उपलब्धि प्राप्त की है? बहुत सी उपलब्धि उस व्यक्ति द्वारा प्राप्त कर ली जाती है और बहुत सी उपलब्धियों को प्राप्त करने की वह आकांक्षा करता है। उस समय व्यक्ति स्वयं उपलब्धि प्राप्त करने के लिए गुणों व मात्रा के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करता है। यदि उसकी उपलब्धि लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है तो वह संतुष्ट हो जाता है और यदि प्राप्त नहीं कर पाता है तो अपने आपको असफल व्यक्ति मानता है। उसका असफल होने का प्रभाव उपलब्धि से

नहीं आता है बल्कि उपलब्धि व अभिलाषा महत्वाकांक्षा के मध्य सम्बन्धों से होता है। इसी कारण आकांक्षा या महत्वाकांक्षा में इतनी समझ होनी चाहिए कि वह कैसे स्वयं के सिद्धान्त की सफलता व असफलता को प्रोत्साहित करने में समर्थ हो सके।

अध्ययन का महत्व

मानव समाज के विकास में विज्ञान की अभूतपूर्व भूमिका रही है। विज्ञान ने व्यक्ति और समाज के जीवन में क्रान्ति उपस्थित कर दी। वैज्ञानिक अभिवृत्ति की प्रवृत्ति यदि बच्चों में विकसित होती है तो वे अधिगम के साथ साथ कौशल, ज्ञान और अवबोध की प्रकिया को भी स्वस्थ बना सकेगें एवं बौद्धिक विकास के साथ साथ स्वावलम्बन की शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। जो आधुनिक जीवन एवं शिक्षा पद्धति की मांग है। तकनीकी समस्याओं का हल करने की दक्षता भी वैज्ञानिक समझ का परिणाम है। वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा भौतिक विकास प्राप्त किया जा सकता है। वैज्ञानिक जागरूकता एवं तकनीकी जानकारी से सुक्त होने पर ही यह संभव है। अतः जब देश में विज्ञान के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तो विकास के लक्ष्य आसानी से प्राप्त किये जा सकेगें। सामान्य शिक्षा और विशिष्ट विज्ञान की शिक्षा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति से रचनात्मक प्रवृति से काम करने का रूझान एवं क्रियात्मक मार्ग निर्मित करती है। विद्यार्थियों में तथ्यों एवं क्रियाओं के प्रति जिज्ञासा का भाव, उनको धैर्यपूर्वक अवलोकन कर वस्तुनिष्ठता से तथ्यों एवं क्रियाओं को संकलित कर प्रायोगिक क्रियात्मकता का गुण तथा कुशलता विकसित करने का उद्देश्य पूर्ण किया जाता है जिससे वे भावी जीवन में उदारवादी बनकर अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों को त्यागते हुए संचार साधनों के माध्यम से अपने मानसिक क्षितिज को नव विचारों एवं क्रियाओं से विस्तृत एवं सबल बना सकेंगे।

आकांक्षा ऐसा उच्च आदर्श है जिसे प्राप्त करने की व्यक्ति की इच्छा तो होती है किन्तु वह सामान्यतः उसे पूरा नहीं कर पाता है, धीरे–धीरे यह आकांक्षा व्यवहारिक हो जाती है, और व्यक्ति उसे प्राप्त करने में सफल हो जाता है। छात्र की व्यक्तिगत इच्छा उसकी आकांक्षा होती है। शैक्षिक आकांक्षा का तात्पर्य है छात्रों द्वारा भविष्य के लिए बनायी गयी योजना तथा मानव प्रगति की अभिलाषा उसकी स्वयं की आकांक्षा होती है, यदि वह आकांक्षा नहीं करता है तो उन्नति भी नहीं कर पाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व की गरिमा का आदर किया जाना चाहिये। व्यक्ति को सामाजिक विकास का लक्ष्य न मानकर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अंतिम लक्ष्य होना चाहिये। व्यक्ति के मन में आकांक्षा होती है कि उसके व्यक्तित्व की गरिमा का आदर किया जाना चाहिए। इस प्रकार शोधकर्ता द्वारा वर्तमान स्थिति में विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की दिग्भ्रमित स्थिति की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन कर शिक्षा जगत के सामने निश्चित निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

अध्ययन का औचित्य

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग–अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन ''उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन'' पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालयोपयोगी, समाजोपयोगी एवं विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन

1. शोध कार्य हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
2. शोखावाटी क्षेत्र में झुंझुनूं जिले की सात तहसीलों (नवलगढ़, उदयपुरवाटी, झुंझनूं, खेतड़ी, चिड़ावा, बुहाना एवं मंडावा) के अन्तर्गत आने वाले सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. अध्ययन में 11वीं कक्षा के कुल 300 विद्यार्थियों (150 छात्र + 150 छात्रा) तथा 12वीं कक्षा के कुल 300 विद्यार्थियों (150 छात्र + 150 छात्रा) को सम्मिलित किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) की गणना की गयी है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – IV.1
उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

छात्र	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
छात्र	150	55.82	6.83	3.80		सार्थक अन्तर हैं।
छात्रा	150	52.46	6.25			

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अरोड़ा, रीता (2005). शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार. जयपुरः शिक्षा प्रकाशन पृ. सं. 326–327

अग्रवाल, जे.सी. (2000). स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास. नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, पृ.सं. 252

अग्रवाल, उमेशचन्द्र. (2004). सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य कमजोर प्रयास. नई–दिल्लीः भा.आ.शि., एन.सी.ई.आर.टी., नई–दिल्लीः पृ.सं. 9

टलतेकर, अनन्त सदाशिव (1968). प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति. वाराणसीः नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स. पृ.सं. 155

चौहान, एस.एस. ;1998द्ध. उच्च शिक्षा मनोविज्ञान विकास. नई दिल्लीः पब्लिशिंग पृ.सं. 31

ढोढियाल, एस. पाठक (1990). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51

कपिल, एच के. (1979). अनुसंधान विधियाँ. आगराः द्वितीय संस्करण. हरिप्रसाद भार्गव हाऊस. पृष्ठ संख्या–23

कोठारी, सी.आर. (2008). अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी. आगराः न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन. पृष्ठ संख्या–2

चौबे, सरयू प्रसाद (2005). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस. पेज न.184

चौहान, एस.एस. (1996). सर्वांगीण बाल विकास. नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो. पेज प. 591

जायसवाल, सीताराम (1994). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो मंदिर पेज 221

ढोढियाल, एस. पाठक (1990). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51

पाठक, पी.डी. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं. 245, 552,450

पारीक, प्रो. मथुरेश्वर (2005). उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा. जयपुरः शिक्षा प्रकाशन. पेज 22

प्रकाश, जी. (1995). सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा. नई दिल्लीः शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार. पृश्ठ संख्या–27

भटनागर, आर.पी.(1973). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–107

भटनागर, सुरेश (1996). शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं. मेरठः सूर्या पब्लिकेशन. पृ. स. 440.

भटनागर, सुरेश (2009). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः लायल बुक डिपो. पृष्ठ संख्या–153

भार्गव, ऊषा (1993). किशोर मनोविज्ञान. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–99

भार्गव, महेश (2007). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण+मापन. आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस. पेज– 463–64,526